

अरविन्द ठाकुर

जन्म : 14 फरवरी 1957, सुपील

शिक्षा : बी. ए., एल. एल. बी.

व्यवसाय : कृषि

पहिल कविता : 1970 में

मैथिलीमें प्रथम प्रकाशित रचना : 1981, मिथिला मिहिर

हिन्दीमें प्रथम प्रकाशित रचना : 1982, आत्मकथा दैनिक

हिन्दी-मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिकामें कथा, कविता प्रकाशित

किछु पत्रिका सेल मैथिली रचना सभक अनुवाद-कायें

मैथिलीक अनियतकालीन पत्रिका 'संकल्प'क सम्पादनमें सम्बद्ध

प्रथम संग्रह : परती टूटि रहल अछि (कविता संग्रह)

एहि संग्रहमें : 1992 - 93 क कविता

प्रकाशनापीन : अन्हारक विरोधमें (कथा संग्रह)

सम्पर्क : बिप्लव भवन

बाई न० — 11

सुपील : 852131

बि हा र

परती टूटि रहल अछि



अरविन्द ठाकुर

परती टूटि रहल अछि

अरविन्द ठाकुर

किसुन संकल्प लोक

सुपौल

ॐ समर्पण ॐ

© अरविन्द ठाकुर

पहिल बेर : 1993

प्रकाशक : किसुन संकल्प लोक

किसुन कुटीर, मुपील - 852 131, बिहार

आवरण : मोबु

मुद्रक : सीरम प्रेस, मुपील

मूल्य : पचीस टाका मात्र

Parti Tuti Rahal Achhi

A Collection of Maithili poems by

Arvind Thakur

Rs. 25/- only

प्रखर पत्रकार, साहित्यकार, समाजसेवी आ स्वतंत्रता सेनानी

स्व० बलेंद्र नारायण ठाकुर 'चिप्लव'

जे हमर

पिता, गुरु आ नायक छलाह आ जे आइयो हमर चेतनाक

गह्वरमे पूर्ण चमक संग उपस्थित छथि

बड़की माँ

स्व० सुमद्रा देवी

जनिकर स्नेह आ ममत्व हमर घरोहरि अछि आ जनिकर मृत्युक
पीड़ा हम अखनो अनुभव करैत छी

माँ

श्रीमती गायत्री देवी

जे हमरा जन्म देलनि, एहि योग्य बनौलनि आ जनिकर आशीषक

हाथ सौभाग्यवश अखनो हमर माथ पर अछि

बड़की दीदी

श्रीमती पुष्पा पाण्डेय

जनिका अपन भाइ मे कोनो दोखे नहि देलाइ छनि आ जकरा

सेल ओ सृष्टिकर्त्तोंसँ सगड़ा मोल लऽ सकैत छथि

आभार

भाइ सुब्रत मुखर्जी

जो हमर नीक-अधलाह कोनो काजमे सदति संग रहलाह

भाइ केदार कानन

भाइ नवीन कुमार दास

जिनकर संगतिमे हमर शब्दकेँ चमक भेटल

भाइ प्रो० राजेन्द्र झा

भाइ विनोद कुमार वर्मा

जिनकर स्नेह आ मैत्री हमरा सदति उत्साहित कयलक

भाइ प्रमोद कुमार सिंह

पूर्व विधायक, सुपौल

जो हमरा ठेलि कऽ साहित्य-मृजन सेल बाध्य कऽ देलनि

पछिला वरखक पामुन । फनुआसँ तीन दिन पूर्ब अरबिन्द भाइ एकटा प्रस्ताव देलनि-नवीनजीक बैसकीमे । हमसभ प्रायः प्रत्येक सोन नवीनजीक ओतय बेसी । साहित्य-चर्चा, काव्यपाठ । अरबिन्द भाइक उपस्थिति बीके लागल छल मुदा अकस्मात बैसकीमे जाति प्रस्तावक चर्चासँ कनेक बिरमय भेल । हमर आ नवीनजीक दृष्टि एके सभ अरबिन्द भाइक चेहरा पर जमि गेल । कहूनि अरबिन्द भाइ-फनुआक पूर्ब सम्मया पर महापूर्ब सम्मेलनक तऽ पर कोनो आयोजन हम सभ नहि कऽ सकै छी ?

मोन बिर भेल । हम हुनका दिन तकैत रहलहुँ । मोन पड़ल १९८१ क एकटा रूपहर । अपन दबाइक दोषान पर बैसल अरबिन्द भाइ हमरा बजौलनि । गेलहुँ तँ बेचिरीमे एकटा नमुकधा देलनि । तकरा हम बिबिला मिहिरमे पठा देल आ सँ प्रकाशितो भेल छल ।

अरबिन्द भाइ फेर टोकलनि-सो बिचारा ?

अगिला दू दिन गहन व्यस्ततामे बीतल । फनुआक पूर्ब सम्मया पर 'बोल-समागम' क अर्जुन आयोजन सुरोतक व्यापार संपर्क सभा भवनमे सफलतापूर्वक सम्पन्न भेल । अदभुत उत्साह आ ओसुबएल भरल श्रोतावध, दर्शकगण । वन्त मोर, वन्त मोरक सबवेत स्वर । फनुआक फनुबहटिमे भातल दर्शक । मंत्रमुग्ध भेल । करतल-अश्रुतिक स्वरसँ सम्पूर्ण परिचय आच्छादित । एहि बोल-समागमक आयोजक रहिषि अरबिन्द भाइ । एक आध सगताह ओही उत्साहमे बीति गेल । तकरा बाद सत्राकिहुँ पूर्बवेत ।

जाइ अरबिन्द भाइक एहि प्रथम कथिता संग्रहक 'यात्रा-कथा' जिलैत हमरा अनेक-अनेक प्रसंग मोन पड़ि रहल अछि ।

पछिमे वरखक गरमीक एकटा सोन । डा० नवीनजीक संग अरबिन्द भाइकेँ देखबा देखलहुँ । हुनका जीवित भऽ गेल रहनि । अत्यन्त कमजोर, अशोषकित । दबाइ जलैत रहनि नवीनजीक । छोरे-छोरे स्वस्थ होइत अरबिन्द भाइ ।

मोन स्थाय । जाइ आ हुनक कुशल-शोमक बाद साहित्य-चर्चा । घंटा, दू घंटा । समय कोना नीति जाइत छल-बहल नहि लागय । साहित्यक चर्चा हो तँ समयक पाहूँ छीके नहि लगेत छैक ।

अरबिन्द भाइसँ परिचय बहु पुरान छल, मुदा बोल-समागमसँ पूर्ब एतेक धक्कटता आ विकटता नहि । जाइत अर्बैत उज्जर घषघष कुरता-पायआसमे भेटिषि । नमस्कार-वात्ती । कुशल धनं । वल । मुदा समयक बक परिवर्तित भेल ।

मोन पड़ल कोहूँ पूर्व 'अकेला' आ 'प्रसिद्ध' नामक स्वनीय बन ।
आ ताहिमे अरविन्द भाइ कविता, मर्म, पद आदि-आदि । ओहूँ समयक
लेखनमे एकटा अन्तर्भेदी अङ्कित । जीवन आ ठकर विस्मयको परिचिन लेखन ।



मुणोलक ऐतिहासिक साहित्यिक वातावरण । किमुनजीक अथक प्रयास
आ निरन्तर संघर्षसँ साहित्य आ संस्कृति हुनक जीवन कालमे एतय अपन चरम
पर छल । भाषाक कोनो देवाल नहि । कोनो अवरोध नहि । मुदा, मैथिलीक
प्रति एकान्त निष्ठा । मुणोलमे साहित्यिक-सांस्कृतिक वातावरण जनबानी किमुनजी
एकटा आधार-स्तम्भ रहलाह । एकटा दीर्घ परम्पराकेँ स्थायी आधार भेटलैक ।
प्रो० मायानन्द मिश्र, रामानुज झा, प्रो० महेन्द्र, प्रो० धीरेन्द्र शीर, डा० सुभाष
चन्द्र सायन, सुकान्त सोम, महाप्रकाशक उर्वर-भूमि । तकरा बादक अनेक पीढ़ी
सम्पन्नशील पीढ़ी । कतेक-कतेक रास बात इतिहासक मर्ममे बसल पड़ल अछि ।

किमुनजीक समकालीन जगह स्व० बल्लभ नारायण ठाकुर 'चिन्तन' क
प्रकाश लेखक, व्यंग्यकार आ पत्रकार । अपन निर्भीक आ निष्पक्ष पत्रकारितासँ,
अपन चौखणर व्यंग्य आ कवितासँ ओ निरंतर साहित्य सेवा करैत रहलाह । जन-
जीवनमे व्याप्त विसंगतिकेँ अपन धारदार लेखनसँ उघाउँत रहलाह ।

जोना, 1970 क पश्चात मुणोलक साहित्यिक परिवेश अकस्मात समान्त
भेड भेल । मुणोलक साहित्य अन्धकारक कोनो बहुरंगमे पनि गेल हो जेना । छोट-
छोटा इजोकर प्रकाश अवश्य छल मुदा ये दीप जकाँ टिमटिमाइत । समयकेँ संग
सङ चलनिहार किमुनजीक बाद एतिहास प्राय दस दशैं छरि कोनो साहित्यिक
आपोहन नहि भेल । परनी जकाँ निस्सन्द रहल मुणोलक उर्वरा धरती ।
मुदा.....

मुदा, धरती उर्वरा होइत अछि । पमिकेँ जहलहुवैत बेरी कहाँ लगेत छैक ।
जन्म लइत, गर्भोत्त कलिल अपन मूरी अवगईत धरतीकेँ चुम्बाक लेख व्याकुल-
उताहुल रहैत अछि..... ।

पिता स्व० बल्लभ नारायण ठाकुर 'चिन्तन' क लेखन-परम्परा अरविन्द
भाइकेँ विरासतमे भेटलनि । घरक साहित्यिक वातावरण आ परिवेश लेखन लेख
मेरित करैत रहलनि आ ओहि वातावरणमे ओ रमल गेलो रहलाह ई अलग बात
चिक भे ओ तखन स्वान्तः सुलाय बेसी निर्वैल जखलाह । मुदा, 1984 मे पिताक
निधनक पश्चात एकटा पैघ शिवन । किमुनजीक वातमासँ मुजबैत रहलाह
अरविन्द भाइ ।



मोन पड़ैत छवि सघन राजनीतिमे जीवन अरविन्द भाइ । मुनक काहेसक
अभाव । मुदा अजिबक गहर अन्धकार । विहाय मुदा कानाच परिचयक जिला
अन्धकार । मेला साहित्यिक साधक । तगर, प्रभाव, जिला आ राज्यक राजनीतिमे
व्यस्त, अतिव्यस्त । दुबल । राजनीति केर पीठ-मध्यमे मागल । मुदा तखनो
राजनीतिमे स्वायत्तनिवाहक पोषक-स्थक बिप्लव निरन्तर सघर्षरत ।

मुदा, ओहूँ राजनीतिमे एकटा स्वयं छवि । उन्मुक्त आ उदार । कोनो-
पकारमे लागल । वर्तमान राजनीतिक अन्धकारमे लगातार एकटा खोज । प्रकाशक
गोख । अभावभावक साइँ पृथिमाक प्रतीक ।

राजनीति केर ओहि चादरमे बन्द कोनो दाग नहि । बेदाद । स्वयंछ ।
गाक-सुघरा । जतनमे ओहूँ गेल राजनीति केर चादरि । जल की तस रहल
सीनी चरमि ।

समय बीतैत रहल छल । समय बीतैत रहल । आ ओहि राजनीतिसँ
मोहभंग भेलनि हुनक । सब किछु ओहि देखनि । तटस्थ दृष्टा जकाँ देखैत
रहलाह । देखिने टा रहलाह । ने कोनो मतिपत्र, ने कोनो उपचार ।

उपचार भेल साहित्यमे । 1970 मे लेखनक बीच-प्रसूटन भेल छलनि ।
डाफरीमे चुपचाप लिखब, अपने पढ़ब । डाफरीमे ग्रेजुएल-सेमिनर कविता, कथा,
गीत, गजल । सबकिछु भेल ।

मुदा ई कोहिम जेना जीवनक मुखा मुखाकेँ उतारनक धरती पर ।
अस्वस्थतामे समय भेटैत छैक लिखवाक आ पढ़वाक । से समय भेटलनि । सुखरत
समय । निर्वाह कतिथे मिलैत रहवाक समय । अपन समय । अपन लेखन ।
अपन अभिव्यक्ति । मौनक जेबक रिक्ता रहनि, प्राणक जेबक आकांक्षा रहनि-से
जेना समेटा साहित्यिक प्रवाहमे उतरैत रहल ।

उपरैत रहल आ आधार लेल रहल । कवितामे, कथामे, लघुकथामे,
विचारमे आ हुमर समक प्रतिदिन होइत नला सामन्य मोड्डी । डा० लखनजीक
भाबा आ हुमर समक काज पाठ । कथा पाठ । एहि मोड्डीमे कहियो जीवकान्त
आबि जाबि । कहियो डा० मायानन्द मिश्र । कहियो उदय शर्मा । कहियो
काशीचन्द्र कोनार । कहियो सुभाष भाइ, कहियो महेन्द्र भाइ, कहियो महाप्रकाश ।
मोड्डी चमैत रहल । चलेत रहल काज-पाठ ।

लखनजीक कविता, विवेन्द्रजीक कविता, अरविन्द भाइक कविता, हुमर
कविता । आ ताहिपर जमिकड नवी । काट-छाँट । मैथिलीक स्थिति, मैथिलीक
चिन्ता, मैथिलीक प्रयत्न । सप होइ आ चर्चा होइ आ सपमे होबि बशोक असु
प्रो० रामेन्द्र झा, विनोद कुमार वर्मा, सुजल मुजर्मा, अरुण झा, निर्मल, प्रकाश

आदि-आदि । एलनो ई मोषी नलंत अछि । छंग-संग सहयोगक लेल सदैव तत्पर उपरसिगत समुदाय नाम ।

एहि बेध्दा, एहि चिन्ता, एहि मोषीक प्रतिफलन चिक प्रस्तुत काव्य-मंकलन — इरती दृष्टि रहल अछि । एहि संघर्षमे 1992-93 क कविता मास संकलित भेल अछि ।



ई परती चिक यथार्थवादीक । यथार्थवादीक दानव । एकर हुटव, एकर मुत्तु आश्चर्यक अछि । एहि संघर्षमे तकर लोख मैथिलीक पाठककेँ हेतनि, से विरहमास अछि ।

छुट्ट राखै मारेबाजी, जनवादी चेतनाक मलत प्रसार, जनविरोधी आ प्रपति विरोधी कविता मैथिलीमे बहुत विशाल मेन अछि आ फिल्लल जा रहल अछि । एहन कविक संख्या ठीके अस्त्यप अछि जे भारतीय आ विश्व मानवताक सोझी ठगु भेल अनेक-अनेक संघर्षक जटिलताकेँ 'भोमिह' रहल छथि आ मनुष्यक होयबाक अनेकानेक पहलूसँ अपन परिचिति बनौने छथि । कवि अरविन्द ठाकुर अपना उपर निर्मम निदर्शना आ संयम राखि विवेकसम्मत हुंगे' कविता लिखै छथि ।

अरविन्द ठाकुर आस्थावान कवि छथि, ई हुनक कविताक स्वरसे प्रमाणित अछि । ओ एकटा एहन भाषाकेँ विकसित कमलनि अछि, जे हुनक स्वात्मक अनुपम अछि । हुनक कवितामे हुनक वैचारिकताक सक्रिय भूमिका रहल अछि । ई ओहन कोनो पटना, भावना, आ दृष्टिकेँ अपन काव्य विषय नहि बनबैत छथि जे हुनक अनुभवक संसारमे रनि पथि नहि गेल हो आ जे हुनक जीवनक अंग नहि बनि गेल हो—सैह कारण चिक जे हुनक कवितामे विश्वसनीयता एकटा महत्वपूर्ण विशेषता चिक ।

हुनक अनेक कवितामे मानव-समाजक आत्मीय आ यथार्थ चित्रण भेल अछि आ तहिना दोसर दिस प्राकृतिक परिवेशक सूक्ष्म चित्रण । जतने विस्तृत अछि हुनक ऐन्द्रिय-बोध, ततने सक्रिय अछि हुनक अभिव्यक्ति-सामर्थ्य । दैनन्दिन जीवनक एकदम परिचित परिवेशसँ अरविन्द ठाकुर सामान्य आ साधारण चिन्मकेँ उठबैत छथि आ तकरा अपन क्षमता आ सामर्थ्यसँ कवितामे वैज्ञानिक प्रदान करैत छथि ।

सहजता आ स्वाभाविकता अरविन्द ठाकुरक कविताक पैर आ रेखांकित करवला गुण चिक । ई अतिरिक्त स्थिति आ सावध कवि नहि छथि । हुनक स्वर संयत, समीचीन आ जेँ प्रभावी अछि । अपन अनुभवकेँ कम सँ कम सन्देश, बिना

कोनो ज्ञान-सपेठक, बिना कोनो अतिरिक्त कलात्मक प्रयास अथवा छिछपत नयनकारकेँ मूर्त कऽ देव हिनक विशेषता चिक । अपन अनुभव-संसारक सहज-संयत अभिव्यक्ति ।

राजनीतिसँ जुड़ाव हुनक कविकेँ एकटा स्वाभुवूत भूमि प्रदान कयल । राजनीति हुनक कविताक एकटा महत्वपूर्ण पक्ष चिक । प्रस्तुत संकलनमे तकर रूप-दर्शन होइत अछि । हुनक कविता ओहन राजनीतिकेर विरोध करैत अछि, जे पार्श्वदृष्टि आ ध्वंसात्मक अछि । हुनक कविता लोक-जीवनसँ जुड़ल अछि आ ई ओतहिसे अपन काव्यत्मक ऊर्जा प्राप्त करैत छथि । शोषकक तमाम अस्व-साधसँ कवि अरविन्द ठाकुर परिचित छथि । ओ व्यवस्थाक धूर्तता आ मक्कारीक रस्ता-रेषासँ परिचित छथि । ओ जनैत छथि जे कोना शासन-व्यवस्था लोक-संस्कृतिक अनेक उपकरणक उपयोग अपन हित, अपन विकास लेल करैत अछि आ लोक-संस्कृतिकेँ अपन विलासिताक वस्तु बुझि तकरा आरक्षित रखैत अछि । ओहन तमाम स्थितिक विरोधमे हुनक कविता ठाढ़ अछि आ जनताकेँ तकरा लेल लबरदार करैत अछि ।



अरविन्द ठाकुर ई पहिल काव्यकृति चिक । एहिमे निश्चित रूपसँ एकटा अनवरूपन छहो अछि आ ई स्वाभाविक चिक । हमर विषयसँ अछि मैथिलीक विकास आ मैथिलीक प्रति अपन निष्ठा लेल समर्पित एहि रचनाकारक पहिल कृतिक स्वागत महत्वपूर्ण ईहे होइत ।

गोपी जयन्ती 1993

केदार कानन

॥ ओ चिड़ नहि खोलैत अछि लोल

आकाशक कनकनीमे
आ मेघक अन्धकारमे
आ मेघसँ अनवरत
खसैत फूहीमे
ओ करण कन्दन करवा लेल
ओ नहि खोलैत अछि लोल

प्रकाश आ तापक लखय भंडार
सूर्यक स्वागतमे अनेरे
पुजलैक अछि ओकर कंठ ॥

जीवकान्त

॥ रस्ता केहूनी होइ कतौ जाइत होइ
पैघ बात ई छेक जे अहाँ आ रहल छी
हम एहि बातसँ कनेको सहमत नहि छी
चलऽ तऽ हम निश्चयत रूपसँ
यात्राक अन्त घरि चाहैत छी
सखन ई सुनिश्चित हेबाक चाहौ
जे अही रस्तामे
आगँ कोनो ठाम जा कऽ
ओ गाम पड़ैत छेक
जकरा हम अपन गाम कहैत छी ॥

कुलानन्द मिश्र

यात्रा / 1

पानि / 4

सुखि बेल गाछ / 6

मेल / 8

निजला / 10

सामान्यकेवा खोलैत स्त्रीगण / 11

एतेक खराप समय नहि आयल / 13

रसीदी टिकटमे 'इश्क' शब्द देखिके' / 14

हम आ अहाँ : १ / 15

हम आ अहाँ : २ / 15

हम आ अहाँ : ३ / 16

हम आ अहाँ : ४ / 16

हमर दोस्त : १ / 17

हमर दोस्त : २ / 18

कबिताक निजता / 19

कबिता सुनबैत केदार कानन / 20

रहस्य पढ़त / 22

विरह / 23

एक दिन / 24

पीठ पाछो / 25

अजोह पम्हवला छोड़ा / 26

कवि / 27

नहि जानि किएक / 28

कवि महाप्रकाश / 29

प्रेम / 30

जानि रहल अछि सिंह / 31

अहाँ दिस अबंत छी / 32
 भोर / 33
 विश्वास / 34
 आपन / 35
 जे ठोर पर ठाढ़ भऽ सकैत लोक / 36
 परती टूटि रहल अछि / 37
 गिद्ध / 39
 हम पूरि कऽ जाय चाहब / 41
 ताकि रहल छी जमीन / 42
 माटिक डगर पर चर्वेत लोक / 43
 चिट्ठी / 44
 चाहय छी / 45
 पुछारि / 46
 कवि अस्वस्थ छवि / 47
 लदूरी भगत / 48
 पंचतपा / 50
 ओ अगि / 51
 अयना / 52
 किशुनदेव लोहार / 53
 होइछ एहनो / 55
 कछमछी / 56
 आत्मसम्मान / 57
 जखन बादशाह हँसैत अछि / 58
 अभिनन्दन / 59
 आक्रमण / 62
 दूध भरल पाथर / 63
 बुलबुल / 64

यात्रा

मा
 अहाँक कोखिमे आबऽ सँ पूर्व
 महानृत्यमे
 भटकैत होयत हमर अस्तित्व
 आकाशगंगाक असौम प्रसारमे
 अनविनत ग्रह - पिण्ड जकाँ प्रायः

मा
 अहाँ अपन कोखिमे
 हमरा अस्तित्वकेँ देल आकार
 हमरा हमर 'हम' देलहु
 जे होयबाक अछि काहि
 नहि जनैत छी
 मुदा आइ
 आइ तँ
 माउस मज्जा घमनोसँ बनल
 एकटा देह छी हम
 जाहिमे अछि प्राण आ चेतना
 आ जकरा
 फुजल आँखिमे देखि सकैछ
 केओ आँखिबला
 किन्तु मा
 हम हेरा देल
 अहाँक देल 'हम'
 वा प्रायः ओशरा गेल
 हमर 'हम'
 हमरे असौमित इच्छाक मकड़जालमे

शिक्षकसँ घेरायल हाता
 मित्रक जुबल मैदान
 राजनीतिक दलक अखाड़ा
 एहि बन्धनूहमे

घेरा मेल साइत
 हमर 'हम' केर अभिमन्यु
 व्यक्तिसँ घर, परिवार, समाजपरि
 खेलौनासँ खेलैत
 पेंसिन, फुकना आ टोपीसँ गुजरैत
 विद्यालय
 महाविद्यालय
 आ विश्वविद्यालयक लाक छनैत
 कोखिसँ कोरा
 कोरासँ माटि
 आंगनसँ दरबज्जा आ
 दरबज्जासँ पथराह यथार्थ घरि
 कऽ लेल हम कतैको यात्रा

किन्तु मा
 एहि यात्राक भटकाबमे
 हमर 'हम'
 कहाँ ताकि पीलक अपन असली बेहरा
 महत्वाकांक्षाक कांचक
 छिड़िआयल टुकड़ीमे

आ मा
 तखने एक शुभ दिन
 शब्द सँ मेल भेट
 जे हुलसिकऽ कहलक-स्वागतम
 स्वागतम
 ओ भटकैत मीत !

बेदाय कांच जकाँ चमकि रहल शब्द
 पुलकि उठल छलहूँ हम ओहिमे हुलकि कऽ
 हम देखलहुँ
 जे बहुत दिनक बाद
 हमर 'हम' हमरा संग छल
 शुभ भवल रूपमे

मा
 बहुत दिनक दुलदायी यात्रा
 आ पीड़ासँ भरल भटकावक बाद
 भेटल ओ जगह
 जतय भऽ सकैत छल पड़ाव
 ओहि पड़ाव पर
 शब्दक संगतिमे
 जहिना - जहिना मेटाओल अपन 'हम'
 तहिना - तहिना विराट होइत मेल
 हमर 'हम'

मा
 हमरा विश्वास अछि
 आब आरो नहि भटकत हमर 'हम'
 शब्दक संगतिमे
 आ की पता, मा
 जतय राखल हम आइ पड़ाव
 साइत काल्हि
 वैह भऽ जाय हमर लक्ष्य
 हमर गंतव्य

पानि

माइक दूधक बाद
स्वीकारलक जाहि बुझके ओकर कंठ
पानि छल ओहि इनारक
जकरा खोदबोने रहहि ओकर पिताक पिता

आबि जाइत रह्य बाढ़ि आ
उफनैत कोसीक पानि
पसरि जाइत छल चतुर्दिक
झुबि जाइत छल ओकर गेल
ओकर घर
आ ओ इनार सेहो
जकर पानि सिंचैत छल ओकर देह

तखन ओकर पिता
गड़बोलनि एकटा कऽल
जाहिसँ पानि
माज दरबन्जाक सम्पति नहि रह्य
ओहिमे हिस्सा हो आंगनक सेहो
ओ अपन भोजैत पम्ह पर
सेलक आनन्द दुनू फोहारक
पितामहक इनार आ
पिताक कऽलक पानिक

आ जखन ओकर कान्ह
अभ्यस्त भऽ गेल बोझक
केसमे छितराबऽ लागल चानीक तार
तखन ओ खोदबोलीक एकटा पोखरि
रहरा जाहिमे उतरि जाइत छल ओ
हेलऽ लगैत छल साछक संग
ओ पोखरि ओकर प्रियगर रहैक
अपन बच्चा जकाँ
ते ओकर इच्छा छलै

जे दूट्य जखन ओकर सांस
तँ ओकर देहके
पोखरि पानिसँ धोकऽ
ओकर मोहार पर
आबिके समर्पित कयल जाय

ओकर कल्पनाक विपरीत
सैबि कऽ लऽ गेल मृत्यु
पोखरिसँ दूर
ओकर पोखरिसँ बहुत दूर
बहि गेल ओकर अस्थि
गंगामे

ओना तँ धर्मशंयक अनुसार
भेटि गेल ओकरा मुक्ति
गंगाक कोरामे
मुदा अपन घरतीक नीचा
अंतिम निश्र सुतब
इच्छा होइत छैक प्रत्येक
मरय बलाक
से ओकरो छलै

सुनैत छी
कहैत अछि विज्ञान
जे माटिक नीचा - नीचा
सम्भ्राम बहैत अछि पानि
विज्ञानक नजरिसँ सोची
तँ सम्भ्राम माटिक नीचा
गंगे - गंगा अछि

मुदा की
ओही सोचने होयत
एहिना

सूरिव गेल गाछ

बेगरताक तीरसँ बेधल
घायल चिट्ठे जकौ छटपटाइत
कोनो मलहम हेरैत
ब्याकुल

पहुँचल है पुरखाक गाछीमे
शानि आ चैनक अपेक्षा लेने

बेचैनी बढ़ि गेल आओरो
जे सुखा गेल छल आमक एकटा बिबाल गाछ
सूखल पातक लागल छल डेरी
ठाढ़ि सभ लोगत छल लकवापस्त

कहियो नेनपनमे
एहि ठाढ़ि सभ पर सुनैत
झँसैत - गबैत
चिबौने छल है टिकुला
लाव - पीयर - सोनहुला फलमे
बडौने छल है दांत
पजौने छल है जमृत - रस
तृप्त भऽ गेल छल मोन - प्राण
मुखायल गाछके देखि
उदासी आ लाजसँ भरल
छूरि आयल रही घर
अपन केबाड़ - बिहीन कोठलीमे

फेर हमर आँखिक सोझाँ
जज्ज सभ नापि - तौलिकऽ
बहुत निर्मम भऽ कऽ
मुखायल गाछक देह पर चलीलक कुड़हरि
मौलक आड़ी कऽ देखलें ओकरा फाँक - फाँक
कमारक बसुला, रंदा आ आन-आन ओजार सभ
कथलक अनेक काट - छाँट
उतारलक ओकर अनेक खोंडिया

आइ

बहुत कुतज छी ओहि पुरखाक
गाछके सिबित करवाक लेल
जनिक कान्ह पर अभरि आयल छल
पटइ केर कहियो नहि भेटबऽ बला वेल्ह

ओहि पुरखाक—

जनिक लगाओल गाछ
भरियो कऽ अछि उपस्थित
बोकड़ि आ केबाड़मे
हमर आ परिजनक मुरखामे रत

बैसिके कुरसीपर कोनो पाहुन
टेबुल पर राखल कप - प्लेट वा चारीसँ
पाबिकऽ किछु अन्न - जल
देत छथि अन्यथा
तखन बेना
मुसकाइत रहैत अछि ओ गाछ

दिन भरिक आगमभागसँ
बाकल आ निस्तेज
पडैत छी अपन बीकी पर
आ जखन अबैत नहि अछि निश्र
तखन थपको देत
आ सोरी मुनबैत अछि
पुरखाक समत्वसँ लबालब
ओ सूखि गेल गाछ



मैल

करोट फेरत बान
धरती दिस कऽ लेलक
अपन चेहरा
चेहरा पर अमरलैक हूँसी
हूँसी सँ निकलि कऽ
चलि पड़ल इजोरिया
अगराइत धरती दिस

चेतना
हमर देहसँ निकलि
चलि पड़ल इजोरियाक संग
ओ देखलक—
अन्हारक मैलसँ जपिल धरती
आ ओहि पर पसरल
जीव - अजीव
नहाबऽ लागल छल
हलसि - हलसि कऽ
इजोरियाक शुभ्र - धवल शीतलतामे
मैलसँ पबिते प्राण
गुनगुनबऽ लागल
इजोरियामे नहायब धरती
जागि उठल संवेदनाक सञ्जटा खोल

हमर चेतना
चहलकदमो करैग
पहुँचल ओहि फुलबाड़ीमे
अतय गुलाबक एकटा गाछ
कहि रहल छल चम्पाक बाछसँ—
हमर संभक देह आ प्राणसँ
निस्तमित भऽ रहल अछि ऊर्जा
प्रस्फुटित भऽ रहल अछि प्रकाश

आ अन्हार - दोड़मे
सम्भलित मनुक्ख
हमरा दिस कऽ लेलक अछि पीठ
कतेक लाजक बात थिक
जे ओकरा संभक देहसँ प्राण धरि
जमि गेल छैक
मैलक मोट पापड़ि

अकरासँ उठैत अछि असह्य दुर्गन्ध
कंकरीटक छतक नीचा रहैत
हजार हाथक ताकतिसँ लैत
हूँ टा हाथ
हूँ टा पसरबला मनुक्ख
युग - युगसँ
बन कऽ लेलक अछि
इजोरियाक धरमे नहायब आ
अपन - अपन मैलसँ
निश्चि पायब

निजत्व

ई सत्य थिक
जे माटिसं फुटैछ सोन्ह गंध
सत्य इहो थिक
जे सेबैत अछि माटि
गाछ - वृक्षके
कऽ दैछ ओकरा
जीवन - रससँ उबहूव

मुदा इहो सत्य थिक
जे गाछ आ वृक्ष
ओकर फूल आ फल
सभक होइछ अपन निजत्व
प्रत्येक फल
प्रत्येक फूल
आ प्रत्येक अन्नक होइछ अपन चरित्र
फराक - फराक
रस - रंग - गंध आ स्वाद

सत्य थिक
जे माटि दैछ जीवन - रस
मुदा ओकरा
ओकर पहिचान नहि दैछ
ई बनबऽ पड़ैछ स्वयं ओकरे
ओकरे बचबऽ पड़ैछ
अपन निजत्व

सामा-चकेवा खेलैत स्त्रीगण

हमरा नेतमे
झासहि ओतल गेल
देनासँ भरल खेतमे
कोना उलसित अछि
सामा - चकेवा खेलैत स्त्रीगण

बिसरि गेल अछि ओ
किछु क्षणक लेल
गोबर - करसी करव
सानी - कुट्टी लगायव
माल - जालके
मगन अछि
अपनामे
सामा - चकेवा खेलैत स्त्रीगण

हमरा नेतमे
उत्तरि आयल अछि आकाश
आहिमे तरेगन जका
छिटकि रहल अछि
सामा - चकेवा खेलैत स्त्रीगण

जीवनक कदुता आ
रातुक अन्हारक
मेढा गेल अछि अस्तित्व
किछु क्षणक लेल
अपन - अपन मुट्ठीमे
कऽ लेलक अछि ब्रह्म
खुशोक पूर्णिमाके
सामा - चकेवा खेलैत स्त्रीगण

बिहिस रहल अछि
हमर बेत
तृप्त - तृप्त छेक ओकर छाती
भरि रहल अछि ओहि पर
खिलखिलाइत आँखिक
घातरंगा फूल

बरस रहल अछि ओहिपर
लबालब गीत भरल ठोरसँ
अमृतक बुल
आँखि आ ठोरसँ नहि
अवन सर्वा गसँ
किलकिल अछि
सामा - लकेवा बेलैत स्त्रीगण

एतैक खराप समय नहि आयल

नहरक
प्रत्येक बनि चुकल
हमारत पर
ओ कऽ रहल छथि दावा
जे 'दुनियाद' शब्दक
हिजे भरि नहि जनैत छथि

ओ
इहो नहि जनैत छथि
जे अखन
आबि जायत अन्हड़ - लूकान
तँ साङ्गत बचल रहि जायत
प्रत्येक हमारत
आ ओ उड़ि जयताह हवामे
कतरा जकाँ

फिदैक तँ
अन्हड़ - लूकानक अखन
एतैक खराप समय
नहि आयल
जे ओ पसरि जाइ
हुनका पसर तर
कतरा जकाँ

रसीखी टिकटमे 'हश्क' शब्द देखि केँ

ओ
कानमे टपकल मिसरी जकाँ
दीड़ि गेल धमनीमे तेज - गर्म सिहरन बनिकऽ
अँसिमे उतरल खुमार जकाँ
पहुँचल दिलमे आ
बनि गेल रसक अजस्र धार
एक मीठ पुलकसँ भरि उठल सर्वांग

एकटा हकीकत जकाँ
सौझाँ आबि ठाढ़ भऽ गेल सोहनी-महिबाब
हीर - रांझा
शोरी - फरहाद
लैला - मजनूँ
रोमियो - जूलियट
आ नहि जानि के - के

ओ टपकन हमरा कानमे
आ हल्लुकैसँ बरबरा कऽ हमर ठोर
ओड़ि लेलक मुस्की आइँता
निष्कन बहुतेगी सपना
पसरि गेल हमरा चाककात

सोबत छी
निश्चये ओहि समय
सम्पूर्ण कायनात पर तारी होयत खुमार
जखन उजूँ क कीसिसँ जन्मल होयत
मदहोशी जुनून आ कुर्बानीसँ लक्षपथ
एकटा निहायत
बेहतरीन शब्द
'हश्क'

हम आ अहाँ : १

हवामे होइत अछि
नोरक आइँता

अहाँ ओसायल पातसँ
टपकैत बुझ जकाँ
खसैत छी अनकर घरती पर
आ बिलीन भऽ जाइत छी ओहिमे

हम
बनि जाइत छी आकाश
आ अहाँकेँ
देखिने रहि जाइत छी
अपनक

हम आ अहाँ : २

पोसरि
नीलामीसँ गुजरिकऽ
गुमार भऽ जाइछ
ककरो मरोमी जमाबन्दीमे

अहाँ
पोसरिमे खसै छी
छपाक
हेलय लगे छी माछ जकाँ
स्वच्छन्द

हम
तकैत फिरत छी
समुद्र आ नदीमे
अहाँकेँ
अनेरे

हम आ अहाँ : ३

आकाश पर पसरि जाइछ
तथाकयिन यू एन. ओ. क. प्रायोजनमे
मित्र - राष्ट्रक समवर्षक विमान

अहाँ पेद्रो डॉनरसे सजल
मुबैत जकाँ
सरकि जाइ छी बुल दिस

हम होइत छी इराक
आ पीटल - पिटासल सन
देखैत रहि जाइ छी अहाँकेँ
अपना हाथसँ छिछलैत

हम आ अहाँ : ४

हम
कोनो सपनायल क्षणमे
रोपि लैत छी अहाँकेँ
अपन आँखि तारलनामे
सपनाक बीया जकाँ

अहाँ
अँकुराइत नहि छी
पौष नहि होइत छी
फल बा छौहक के कहय

सपनाक बीया
गड़ऽ लगेछ आँखिमे आ
तकलीफ देबऽ लगेछ

बीया
अगबे बीया रहि जाइछ
बा सड़िकऽ नामूर बनि जाइछ
टीस दैत रहबाक लेल

हमर दोस्त : १

हमर दोस्त
हवामे भोजैन अछि मुटो
अपरिचित दुश्मनक विरुद्ध

ओकरा अखरैत छैक हवा
हवामे उड़ैत पबेरु
आ वायुयान

ओकरा कचोटैत छैक श्वेत
ओहि पर उगल गाछ
ओकरा फसिल
आ सोन्ह गन्ध

ओकरा कानकेँ खटकैत छैक
गीत आ जुटुक्का
संगहि निर्जनता सेहो

ओकरा चिड़ छैक सड़कसँ
सड़कसँ गुजरैत बाहनसँ
सड़कक कात ठाढ़ वृक्ष आ मकानसँ
ओ गरिबसँ अछि स्वयंकेँ जतैक
ओतबे रीतानकेँ सेहो

हमर दोस्त
नराज अछि जीव - जन्तुसँ
सजीव - निर्जीव
घर - अचरसँ

हमर दोस्त
उछलैत अछि गारि हवामे
परिचित दोस्तक विरुद्ध

हमर दोस्त
नराज अछि स्वयंसँ

हमर दोस्त : २

हमर दोस्त
फैन अछि ओहि शरस केर
आ चलऽ चाहैत अछि
ओकरे पदचिह्न पर
जे कऽ लेने छल अपहरण
एकटा बाबुयानक
अपना हाथमे राखल क्रिकेट - बॉलके
सतरनाक बम बताकऽ

हमर दोस्त
अपन ठोरसं उछालिकऽ
किछु भारी - भरकम शब्द
दैत अछि बिस्फोट केर आभास
आ ओहि शब्दक संग
होबऽ चाहैत अछि
स्फटिकस

मौममक बदलैत
लेबरक रंगमे
धुलि जाइत अछि
शब्दोक रंग
आ हमर दोस्त
हाथ मलैत रहि जाइत अछि
शाइलक जका

ठीके कहैत छथि
महाप्रकाश
धिलण्डी नहि होइत अछि
शब्द

कविताक निजता

वृत्तिक आगि
गूँघल गेल आटा
सोहारी बेसैत मा
वृत्ति पर सेकाइत रोद
ओसार पर पसरल रो
धान वा गहूमक शीश
सौफक गन्ध
अमलतास
जूही
ओइहुलक फूल
रंगीन आँखर
आँगनमे खेलाइत बच्ची
आदि... आदि आदि...

पेट आ आमासो जुड़ल चीजके
शब्दमे रुपान्तरित कऽ
जखन कोनो कलम
घेरि दैत अछि ओकरा
लाल
पीयर
हरियर
भगवा अथवा
तिरंगाक मोल वृत्तमे
तखन लगैत अछि
कवितासँ
छोनि लेल गेल अछि
ओकर निजता
आ ओकरा
जबरदस्ती ओढ़ा देल गेल अछि
कोनो राजनीतिक दलक सदस्यता

कविता सुनबैत केदार कानन

एक दिन
अपन कविता सुनबैत
हिचकि - हिचकि कऽ
कानन लगेत छथि
कवि केदार कानन

अनेक सुनगैत प्रश्न
ठाढ़ कऽ दैत छथि
केदार कानन
हमर चेतनाक सोझाँ - सोझी
जखन ओ करैत छथि बयान
नचूक अँखिमे
नचैत बिस्कुटक
आ बिस्कुट
नगैत अछि हमरा पहुँचसँ दूर
आकाशगंगामे लटकल
कोनो नक्षत्र जकाँ

अपन डबडबायल अँखिसँ
ताकि एकबेर
हमरा दिस
खिड़की दिस
धुमा लैत छथि
अपन चेहरा
साहत कोनो वस्त्र बिड़कीके"
खोलय बाहैन छथि
टटका हवाक लेब
केदार कानन

निरन्तर उपयोगमे रहल
हरक फार सन बमबसाहत
कवि केदार

जे चाहैत छनाह
थमक धमकमें रततम हाथ
एकबेर चुम्बनक लेल
सँह कवि
एकटा बेचस बाप
आ पनिक रुपमे
बरकैत रहैत छथि
नालागृह जकाँ
आ मुलायम दानाक ढेरीमे
नकैत अछि
हुनक कथिक अँखि
थानक ओहि शीशके
जकर पीर - पीरमे लबालब
भरल छैक दूध

हम
निहारैत छी आकाश
आ तकेत छी ओ धरती
जकर आत्माक प्राणमे
सुरक्षित अछि जीवन
केदार काननक

रहस्य पड़त

धधनैत आमिक बीच
रहस्य पड़त शीतल
जल जकाँ

कोलाहलक बीच
शत - संयत
झंझावातक बीच
चट्टान जकाँ अडिग
तमाम बेहूदपनीक बीच
तम्रताके राखव पड़त अक्षुण्ण
दांतक बीच
जीह जकाँ मोलायम
केसक जंगल
आ नरमुखक कठोर हठकी बीच
बेतन मस्तिष्क जकाँ

माउस - मग्ना - धमनीक बीच
कोमल हृदय जकाँ
रेगिस्तानक विस्तारमे
मरदान जकाँ
तमाम निराशाक बीच
अन्हारक विरुद्ध लड़ैत
उमेदक दीप जकाँ
प्रज्वलित

बेचैनीके
कागज पर उकेरवाक लेल
हाथमे कलम धामिकऽ
बैसऽ तँ पहुँचे करत
बैनसँ
छोटे कालक लेल
तपस्वी जकाँ

विरुद्ध

आंगुर !
उतारि कऽ फेंकि दियऽ गदमि
अपन चारुकाल कसन
सोना - चानीक छल्ला
होउ मुक्त धमकैत कसावसँ
तोड़ू एकाध बेर
अपन गौरह
आ लिखि दिओ
एकटा सुनगेत कविता
सोना - चानीक छल्लाक
धराबन्दीक विरुद्ध

आंगुर !
इगित करू
अपन तेज नहबला
नोकगर अशभागके
उज्जर बगुलाक कारी हृदय दिस
आ जस्सुरति पड़य तँ
मुड़िकऽ बदलि जाउ
मुठ्ठीमे

आंगुर !
बाहर करू स्वयंमे नुकायल
बेदव्यासके
कियैक तँ
अहीके लिखवाक अछि
नवयुग केर महाभारत
अहीके बदलवाक अछि
इतिहास
पूबाँसहक स्पाहीसँ
मुक्त भऽ कऽ

एक दिन

एक दिन

कनैत - कनैत हँसि पड़्य
जखन देखा जयनाह
अनेक बरससँ दिखुइल पिता

एक दिन

ठोकर खाइत - खाइत लसि पड़्य
चोट हँसोथय
अकस्मात आगँ बढ़त
भाक हाथ

एक दिन

पिटाइल - पिटाइल पीटि देख ककरो
पीठ पर होयत
अजन्मा पैघ सहोदर

एक दिन

गनैत - गनैत मौन भऽ जायव
आसराक सेल होयत
चारि मोट कान्ह

एक दिन ...

पीठ पाछों

हमर अबरजात देखि
पहिने मच्छइ सतीत्यक

बंक्वला जयह
एखन हँसोथि रहल छलहुँ
कि पावरक ठोकर लागल पवरके
खसलहुँ मुँहमे

बहु मोसकिलसँ उठिकऽ
एखन दू डेग चलने छलहुँ
कि स्वयंके
दस्मु - गिरोहक गिरपसमे पाओल

दिने - देस्यार

सूरजक चमचमाइत रोशनीमे
लुटाइयो कऽ
होसला एखन बाँकी छल

तखने ओ भद्र पुरुष भेटि गेलाह
जिनका ठोरसँ
टपकैत छल मधु
हजार हाथीक बल
देखाइत छल हुबुकामे
हुनक हावक थपकासँ
आइबस्त भऽ गेल हमर कान्ह
सुरक्षाक प्रति निश्चिन्त भऽ कऽ
हम अपन पीठ अरक्षित कऽ लेल

हमर पीठ पाछों

ओ भद्र - पुरुष
हमर मुस्कुराहि छीनि लऽ गेलाह

अजोह पम्हबला छोड़ा

अकस्मात्
अनठोया जका
लागस लगेत अछि
अजोह पम्हबला छोड़ा

हेरावऽ लगेत अछि
ओकर कमनीयता
रक्ष भऽ जाइत अछि
ओकर स्वर आ बेहटा
अ-कोमल जका होमऽ लगेत अछि
अजोह पम्हबला छोड़ा

लगले रंदा मारल
कटहरक लकड़ी सन चमकैत अस्तित्वमे
होमऽ लगेत अछि परिवर्तन
बैरक गाछ जका होमऽ लगेत अछि
अजोह पम्हबला छोड़ा

ओकर संरचना पर
हावी होमऽ लगेत अछि
कोनो अक्षमणकारी पुरुष
मायसँ दूर होमऽ लगेत अछि
अजोह पम्हबला छोड़ा

बन्हन जकां दुसाइत छेक पर-आंगन
संकुचित लगेत छेक दुआरक परिधि
गुट्टी जकां उन्मुक्त भऽ
उड़ऽ चाहैत अछि
अजोह पम्हबला छोड़ा

कवि

ईंटा - गाड़ासँ बनल
ठोस मकानमे
ठोस लकड़ीक टेबुल पर
एकसर
एकटा कोमल किताब

दीतक
संख्याबलक कठोरताक बीच
एकसर
असहाय
एकटा जीह

लोकक
दुनियावी अंगलक बीच
एकान्त
आ एकाकीपनमे डूबल
कविता निखयबला

नहि जानि किएक

नहि जानि किएक
फूलक कोमल कोड़ी दिस
नहि जा पबैत अछि
हमर कविता

जा कऽ टकराबैत अछि पाथरसँ
घुरि अबैत अछि हमरा लग
फेर-फेर पाथर
फेर-फेर हम
नहि जानि किएक
नीक लगैत छैक माथ टकरायल
पाथर सभसँ
हमर कविताके

आ हे
पाथरक अलावा
कौटि सेहो नीक लगैत छैक
हमर कविताके

नहि जानि किएक
नहि जानि किएक

कवि महाप्रकाश

जेना जमीनक तहक नीचा
बहि रहल होइत अछि जल
ओहिना बहैत रहैत अछि
कोनो तरलता
कवि महाप्रकाशक भीतर

परिवारक धार - भार
बच्चा सभक लालन - पालन
बहिनक विवाह आ
घर
अपन घर बनयबाक उदाम लालसा
अनगिनत दुनियाबी झमेला
ओसरा गेल अछि कविता
मुदा, ओसरावल नहि छथि महाप्रकाश
ओसरावल
आ शांत अछि हुनक कवि

ओहि क्षण
माथ ओहि क्षण
हुनक आँसिसँ बरिसैत अछि आगि
जखन ओ दोसरा लेल
सोचि रहल होइत छथि
ओना तँ सदति
तरल रहैत छथि महाप्रकाश

हुनकासँ भेंट कऽ हम
जानलहु ई बात—
मुस्काइत आँखि आ विहसैत ठोरसँ
कीना कहल जा सकैछ
नौर आ दर्दक कथा - व्यथा

प्रेम

हम
एक - दोसरा दिस देखव
आ दुनूक समुद्र
एक - दोसराम ओसरा जायत
हम मुस्कयब आ
उपवनक बीचक आरि
सुप्त भऽ जायत
हम अपन पीठ कऽ लेब ओम्हर
जेम्हर लोकक
ईप्स्य भरल आँखि होयत
हम
एक - दोसरा दिस बड़ायब हाथ
आ दूरीक महासागर
बुझ बनि जायत

आ साइत तखने
यात्रा सतम होयबालक
घंटी बाजि उठत

जागि रहल अछि सिंह

धीरे - धीरे बकरी चरैत जा रहल अछि
फूलक हरियर - हरियर पातके
हरबिराड़ मचा रहल अछि भहोस
दूर - दूर घरि पसरल
हरियर फसिलक बीच
नरम दूबिके छेपि रहल अछि गदहा
झरि समके तोड़ि - मरोड़िके फेकब
हाथीक जन्मसिद्ध अधिकार
होबऽ लागल अछि
गाछक पाकल रसभरल फलके
कब्जा कऽ लेलक अछि बानरक दल
लुकलीक दाँतधरि भऽ गेल अछि बोखगर
बिरसाबला रादम जकाँ
रस्ता - एकपेटिया पर
साइक निरंकुश मनमानी अछि
वा कुकुरक बेहूबनी
सापकेर बिषक बांगुरमे
आबऽ लागल अछि
खाननक गाछ
धीरे - धीरे पलायक रंग
कारी होबऽ लागल अछि

धीरे - धीरे सबकिलु
समेटिकऽ जा रहल अछि
जंगलक क्रूर-बहशी बांगुरमे

धीरे - धीरे सही
मुदा
जायऽ लागल अछि
हमरा भीतरक सूतल सिंह

अहाँ बिस्स अबैत छी

बिहाड़ि नहि आओत
बिरड़ो नहि उठत
नहि होयत आपमानमे कोनो परिवर्तन
प्रलय नहि भऽ जायत
ने डोलि उठत धरती
ने फूटत कोनो विशिष्ट प्रकाश

आकाश नहि टूटत
धरती नहि फाटत
परती हरियर नहि भऽ जायत
हरित काति नहि होयत
सम्पूर्ण की
आओ नहि
कोनो सतुलन नहि बिगड़त
ने कोनो नव समीकरण बनत
ने अंकक खेलमे कोनो हेर - फेर होयत
स्वागतक कोनो शब्द नहि होयत
कोनो तुरही नहि बाजत
ने कोनो भागमभाग ने हंगामा
कोनो जुलूस धरि नहि
सत्य ते ई यिक
जे एकटा पात धरि नहि डोलत
हमर एना कयलास
अहाँक सफेदीके
सियाह आकृतिसँ घेरबाक अलावे
आरो भइये की सकैछ हमरासँ

तेयो अबैत छी अहाँ दिस
उज्जर कागत !
साइत अहाँ छोड़ा सको
हमर मोन पर जमल
बीस आ गर्दाक परत

भोर

लक्ष्य की यिक
ई नहि अछि जात
बुवि रहल छी आ कि कल छी
कहाँ होइछ आभास
की करी
की नहि करी—के कहताह
एहि मरुभूमिमे
हमरा देखबऽ लेल बाट के ओताह
किऐक ओताह ?

सृष्टिक एहि असीमित प्रसारमे
लगेत अछि हमरा
जेना जून्यमे भटकैत
एकटा कण मात्र छी हम
आ एहि भटकावक संश्रामे
ओनाइत अछि
मेढाइत अछि हमर अस्तित्व

नासदीक अम्हार गुञ्ज रातिमे
कनैत छी
आ सोचैत छी
जे एहि रातिक
कसन होयत भोर
मंत्र जकाँ बुदबुदाइत छी
भोर ... भोर ... भोर.....

विश्वास

जखन भेल अनिष्टक आशंका
समाजक उज्जर बगुला सभसँ भेलहुँ भरत
रोग - व्याधि
अनिश्चिततासँ मोन भेल प्रस्त
अभाव आ अन्हारक दशसँ
जखन उपजल भय
भऽ गेल जखन अरजल आत्मविश्वासक क्षय
बाझि गेलहुँ जखन
समस्याक मकड़जालमे
धर - परिवारक भरण - पोषण
पिताक खेल ऋण
सोसल स्टेटसक मेन्टेनेन्स
दसगर्वा काज
आ दुनियादारीक जंजालमे

तखन लोकनाजबश
हे हमर ईश्वर !
हमरे भित्त अहाँक गृहमे
पड़ल हमर पयर
नोकक देखादेखी जोड़ल बुन हाथ
झुकाओल अपन माथ
मुदा,
ने अहाँक दर्शन भेल
ने किछु ओ अनुभव कयल
घुरि आयल छी
खाली - खाली हाथ
अहीं कहूँ हे ईश्वर
कोना होयत
अहाँक प्रति विश्वास ?

झापन

बस
एतबे टा भेल बरखा
कि भीजि जाइ अलकतराक सड़क
एतबे
कि कने घाल उगा सकय
गामक एकपेड़िया
एतबे बरखा
कि भीजि जाय चाड़
आ बुझि सकय घरक लोक
जे कतय - कतय पूर्वत अछि फूसिक चाड़
एतबे टा बरखा
जे असमायल घेतक माटिमे
मुगबुगाहटि घरि नहि हो
निम्र टुटबाक के कह्य

हे बरखाक देवता !
एतबे बरखासँ
आरो क्षीपि जायत चरती
भीतर धरि भीजत नहि जायत
ओकर माटि
कोना होयत बीयाक आरोपण
कोना भरत कोलि
बाझ भेल घरतीक
कोना जायत भाग्य खरिहानक
कोना जूटत बड़द लेल पुआर
कोना मनाओल जायन नवान्न केर उत्तव
किसानक घरमे

हे बरखाक देवता !
एतेक बरखा तँ
बरखा नहि भेला पर
हमरा सबहक आँखियेसँ भऽ जायत

हे बरखाक देवना !
 हम नकारत छी
 अहाँ द्वारा प्रदन
 शीतलताक एहि क्षणिक अनुभूतिके
 एत बे
 मात्र एत बे टा बरखासँ
 किन्नहु
 किन्नहु प्रसन्न नहि छी हम

जँ ठोर पर ठाढ़ भ' सकैत लोक

अलसायल भोरमे
 ओमक मोतीसँ सजल
 मलमली हूबि
 संगमरमरसँ बनल
 नारी - देह जकाँ
 नोक पर तनल अछि

काण ! जे लोक
 चलि पवैत एहिपर
 अपन ठोरक चले

परती टूटि रहल अछि

असंगत धिक
 दूर धरि मारि करयबना प्रशेवात्म
 कोनो आणविक - परमाणविक अस्त्र
 आन कोनो आधुनिकतम आयुध
 असंगत धिक
 परती तोड़बाक लेल

जतय अकास धरतीसँ मिलनक
 भ्रम बैछ
 आ जतयधरि नजरि जा सकैत अछि
 ओतय धरि पसरल
 अन्न - फल - फूलसँ हीन
 यथास्थितिक प्रतीक
 मुदा असीम सम्भावनासँ भरल परतीक
 टूटबाक लेल
 असंगत धिक ई सब चीज

अपरिहार्य धिक
 लोहक एकटा साधारण सन टुकड़ा
 जे भट्टोक लहकैत आगिमे
 तपि सकय
 सहि सकय हथोड़ाक
 अनगिनत चोट
 रूपान्तरित भऽ सकय फारमे
 आ जकरा लकड़ीक टुकड़ासँ जोड़िकऽ
 बनाओल जा सकय हड्ड
 आ सुगन्ध देल जाय
 ओहि हाथमे
 जिनिक शक्तिशाली कठोरतामे
 तरल धानक सुगंध अवैत हो

अवर्गनीय अछि
कोनो परतीके" जेनमे बदलैत
खेलबाक आनन्द
देखू !
जेना कलमक नोकसँ
निकलैछ स्थाही
आ दीडिकऽ कागज पर
बनि जाइत अछि किताब
श्रम - स्वेदसँ भीजल हरक फार
दीगैत जा रहल अछि परती पर
ओकरा भेतमे
रुपान्तरित करबाक लेल

अदभुत अछि !
परती टूटि रहल अछि
छटपटा रहल अछि
यथास्थितिक दानव
गुजि रहल अछि
असीमित संभावनाक द्वारि
परती टूटि रहल अछि
परती टूटि रहल अछि

गिच्छ

कान्हि घरि
खिलखिलाइत छल नेनपन
मूर्धंत छल यौवन
मंद - मंद मुस्काइत छल बुढ़ारी

कान्हि घरि गूँजैत छल
निर्दोष आ उन्मुक्त हँसी
फुलाइल छल फूल औचरमे
आ ओठनीमे छिड़िआइत छल
द्वन्द्वधनुष

कान्हि घरि
खुलन्ती पर छल हिम्मति

कान्हि घरि
शहर शहर छल
शहर लेल

आ कान्हिए राति
पसरि गेल निद्रक डेन
अकस्मात
शहरक आकाश पर

कान्हिए राति
शैशवक बड़ब लागल रक्तचाप
लड़खड़ाबय लागल यौवन
बुढ़ा गेल बुढ़ारी
तारील बदलऽ सँ पूर्वहि
बदलि गेल शहर

आब हँसीमे भूँजत अछि बिलार
 आँचरमे घायल होइत अछि हाथ
 आ ओइनीमे
 खनखनाइत अछि रेजकी
 हिम्मतिक मज्जाके
 मारि गेल अछि लकवा

शहर
 हुनके टा रहि गेल छनि
 जे लगा लेने अछि तिलक
 गिद्ध सभक बीट केर

हम छोड़ि आयल छी ओ शहर
 ओ शहर
 जे काल्ह धरि
 बहुत - बहुत प्रियगर छल
 हमरा लेल
 एहि खेल नहि
 जे बचा सकी अपन माउम-मज्जा
 गिद्ध सभक बाँगुरसँ

हम छोड़ि आयल छी
 ओ शहर
 जे कऽ सकी प्रहार
 निश्चित रूपसँ अल्पजीवी
 गिद्ध सभ पर

हम घुरिक' जाय चाहब

हम घुरिकऽ जाय चाहब
 राजनीति केर जंगलमे
 तोड़बाक लेल गिद्ध सभक डेन
 जे पसरल अछि
 नैतिकताक लहामसँ भरल हममानमे
 ओ हममान जतय गहिने हरितबमना नेत छल
 अमूलक मानि आ जीवसँ घाटल

हम घुरि कऽ जाय चाहब
 स्कूल केर उत्तरमे
 तोड़बाक लेल ओकर जमीन
 जे चलरल अछि
 अमरबेलक फलहीन लतीसभसँ
 आ जतय जीवनक यथार्थमे फराक राखि
 कागत पर छपल कारी आन्दरमे
 लटपटा देल जाइत अछि बीया सभके
 जेलन - संघ - होस्टीसाहबक त्रिकोणमे
 अवस्थान भेल संपट किसान द्वारा

हम घुरिकऽ जाय चाहब
 साहित्य केर दंगलमे
 तोड़बाक लेल ओ फाउन्टेन पेन
 जे भरल अछि निहित स्वार्थक सियाहीसँ
 ओ सियाही जे दिवाहारा भऽ गेल अछि
 आ कागज पर रोपन अछि बबुर

हम घुरिकऽ जाय चाहब
 अपन जीवन केर किताबक पछिलका पृष्ठ सभपर
 बदलबाक लेल ओकर ओ अध्याय
 उलट-पलट भऽ गेल अछि जकर पाति सभ
 आ सव्वक हिज्जे लिखा गेल अछि गलत

हम घुरिकऽ जाय चाहब
 हम घुरिकऽ जाय चाहब

ताकि रहल छी जमीन

बाह्य छी
मुट्ठीमे भरल सपना केर बीयाके छोटिकऽ
उगायब डेर राम गाछ
फेर ओहि माछसँ बीज एकज कए
बेसी बीयासँ उगायब बेसी गाछ
आर बीयासँ आर गाछ
फेर आर बीया
फेर आर गाछ
फेर आर बीया

एहि तरहें एक दिन
एतेक रास बीया
होयल हमरा लग
कि सौसे भरती पर छिड़िया दित है
हम अपन सपना सभके

अखन तँ
मुट्ठी भरि बीया लेल
ताकि रहल छी ओ जमीन
जकरा कोड़ि
तृणरहित कऽ सकी
एतेक उर्वरता हो ओकरामे
कि अंकुरित भऽ सकय
निड्ड'न्ड
हमरा सपना सभ

माटिक डगर पर चलैत लोक

एक डेग आगौ बड़बिते
पथर पड़ैत अछि पालमे
फच !
निकालिकऽ पथर
बढ़वै छी डेग
चप्पलसँ छिटकैत कादो
छिटकि पसरि जाइत अछि
सौसे घुष्टभाग पर
अमिला डेग
आ फेर फच !

हमरा सभक लेल
सभ मौसम बरसाति-ए अछि
माटिक डगर पर
चलैत लोक छी हम
प्रत्येक डेग पर
पाल आ कादोमे
फच - फच करैत

चिट्ठी

ई जरूरी नहि
कि चिट्ठी सभमे हो यमोमात सभक करियाद
आ कि तवाक केर सम्मन
आ कि विवश बापसँ पूरा नहि होमयबला
शहरमे पहुँच बेटाक फरमाइश
आकि किल्लतक कननाइ
बईल कीमत आ बजट केर दोहाइ
आकि दीवाला पीटा जयबाक आ
कम्पनी केर दुबि जयबाक खबरि
बोनो अन्तरंगक अस्वरय भऽ जयबाक वा
हुनक दिवंगत भऽ जयबाक समानार
भऽ सकैत अछि ते पोस्टमेनकेँ
रोज-रोज ओजनी लागयबला चिट्ठी सभक जोरा
आइबो ओजनी लगैत हो
ओकर मुँह पर बुहबुहा गेल हो धाम
काजक बोझ वा बोझक भयसँ
मुदा भऽ सकैत अछि ते
जोराक चिट्ठी सभमे ओजत मन कोनो बाने नहि हो
भऽ सकैत अछि कि ओहिमे हो
कविता वा कथाक मादे सम्पादकीय एकीकृतिक चिट्ठी
फिल्मी रोमानियतमे डूबल-मालल छोड़ा-छोटी सभक
फिल्मी गानासँ भरल कोनो मय-मेटर
मिटिरी भेटबाक खबरि सेहो
भऽ सकैत अछि कोनो चिट्ठीमे
निवाहक निमंत्रण आकि छुट्टिहारक हकार
आकि बेटाक आइ ए.एम. कम्पिट कऽ जयबाक खबरि
आ इहो भऽ सकैत अछि ते
चिट्ठीपर नहि उकेरल गेल हो कोनो शब्द
मात्र उभारि देल गेल हो कोनो फूल केर चित्र
आ निष्पक्षमे चिट्ठीक बजाय राखि देल गेल हो—
मात्र एकटा लाल रंगक रेखाक समान

चाहय छी

चाहय छी
देखब ओ दृश्य जाहिमे
चारुदिवस पसरल हो
पलामक बोन
आ बनफूलसँ पाटल हो डगर सभ
चान चमकैत हो नभमे
सभ राति
तरेगत समेत

चाहय छी ओ स्वप्न
जाहिमे राति
मातल हो सुगन्धसँ
मीठवर परिचितिसँ हँसैत हो
आँसि सभ
टोरक खिल-खिलमे भरल हो
जीवन केर मुस्कान

चाहय छी ओ ययार्थ
जाहिमे तपल हो सभक हृदय
प्रेमक आंचसँ
सभ ठोर पर हो उमेदसँ भरल
भोरका गीत
दुल्ल वा मुखमे सभक समवेत स्वर

चाहय छी ओ आकाश
जे पृथ्वी पर बसल लोक सभक
तरह्य पर पसरल हो

पुछारि

दूर कोनो गाममे
दूर - दूर धरि पसरल
लहलहाइत फसिक मुंग्यसँ सुवासित
कोनो घरक आँगनमे
अहाँ
हुलरबैत होयब
अपन मेनाके
पूति-वासनसँ पलसति पाबि
बैमल होयब
कोनो अयनाक सोझ
निहारैत अपन रूप
गोक्षरबैत होयब अपन केश-राजि
सीकँधक मध्य पाटैत होयब सलका सिनूर

सुदूर अहाँक गामक ओहि कोठलीमे
हमरा दिससँ जाइत पछिया बसात
पहुँचैत अछि अहाँ धरि ?
किछु कुसकुसाइत अछि
अहाँके कानमे ?
किछु ?
हमर नाम ?
हमर नाम ?!

कवि अस्वस्थ छथि

जखन घरती पर बैसल केजो पूछथ—
'वहाँ से भारत आपको कैसा लगता है ?'
आ बान पर ठाढ़ धरनी-ए क कोनो व्यक्ति कहय
'सारे जहाँ से अच्छा !'
केहन लागत अहाँके ?

जुनाओ सुटि लेलाक बाद
मंच पर ठाढ़ एकटा उजरका टोपी कहत—
'विश्वक वेहतरीन तंत्र अछि अपन देशमे ..'
अहाँ छुरि आयब घर आ
अहाँक मुँह दुमि देत समाजशास्त्रक पोथीमे लिखल
पाँति- 'प्रजातन्त्र मार्क्स सभक धामन अछि'
केहन लागत अहाँके ?

माइबेतक पीड़ासँ संबरत कोनो व्यक्ति
माथमे तैलक मालिश करायब बा
दर्दनाशक गोटी खयबाक बजाय
कामक आवेगमे इशारा करय पहुँचिनके
आ असफलता पाबि चलि पड़य
कोनो बदनाम मोहल्ला दिस
केहन लागत अहाँके ?

प्रचण्ड अन्हड़ उजाड़ि देने हो अहाँक घर
अहाँके अहाँक जेबी सहित नांगट कऽ देने हो
अखबार-रेडियोसँ आवि रहल हो
सम्पत्ति आ हताहत सभक डाटा आ खबरि
तखने अहाँक कोनो मित्र अहाँसँ अहीक कबिताक
कोनो पत्रिकामे छपबाक खबरि देअय
केहन लागत अहाँके ?

अहाँ सोचू तावत
अखन कवि अस्वस्थ छथि

लटूरी भगत

घरवालीके

खून आबि रहल छैक तीन माससँ

दू टा नेना

बीमार छैक एक पनरहियासँ

अपन कान्हूक पुरान चोटमे

फोरसँ उठल छैक दई

तैयो मुस्की छैक

लटूरी भगतक ठोर पर

अन्हरीमे गेल छल बाघ

एखने दूपहरमे घूरल अछि

हर-बहरक संग

बड़दके कुट्टी-सानी दऽ कऽ

साइत किछु देने हो अपनी पेटमे

आ एखन माँझके

ब्रह्मोत्तरसँ उचिकऽ माटि अनैत

मुस्काइत अछि लटूरी भगतक ठोर

एहि भाटिसँ लेबल जायत इहेत घरक भीत

नबका बनैत एकटा मकानमे

बाउल-पजेबा उपैत

कसि पड़ल छल मुँह बरे

फूटि गेल छल ठोर

छलकि गेल छल खून

ओही दिन

घर छोड़ि पड़ा गेल छल बेटा

ओही चोट

ओकर छातीमे पिड़ाइत हेनै

मुदा

ओह दिन

फूटल ठोरसँ मुस्काइत छल

लटूरी भगत

मोकक दुल - दरद भगवऽ लेल

ओकरा पर जखन - जखन अबैछ

मोसाईक सवारी

तखने

मात्र तखने टा

ठोर कस्मल होइत छैक ओकर

मुस्की नहि रहैछ

ओकरा ठोर पर

मोसाईसँ

अपन दुल - दरद कहैत

लटूरी भगत सकुचाइत अछि

आ साइन

अपन एहि कमजोरी पर

लटूरी भगत मुस्काइत अछि

पंचतपा

बर्षक गनतीमे छोट
क्षणक ओगमे सुदीर्घ
हमर एखनधरिक जीवन
अनेको बेप
चेरायल अछि यंत्रणाक आगिमे

मृत्युक परिधिसँ कराक
बुझैत रहौ जनिका
ओहि पिताके
बांस घाट पर गंगामे प्रवाहित कऽ
पुवा होयवासँ पहिने
बूढ़ भऽ जयबाक पोड़ा उषने छी हम
पेट लेल सोहारोके
हाव पर लगाकऽ
बहिनक जाहि सीउंथ लेल झुटीने रहौ भिन्नुर
ओहि ओअल - पोछल सीउंथसँ फूँत दईके
अपन अन्तरात्मामे अनुभव कयने छी हम

आब अपना पीठमे धँवैप
कोनो मित्रक चक्कु
अथवा अपनहि बाउग कयन फसिलके
काटबाक लेल बईत कोनो निमकहरामक हाँसू
अथवा अपन सहोदरक
अकर्मण्य भाव्यक लाठी
हमर देह, हमर आत्माके
कनहुसँ आहत कऽ देवाक बायो
हमरा कोनो पीड़ा नहि दैत अछि

हमरा चारुकाल घघकि रहल अछि आगि
माथ पर जरि रहल अछि धौमकानक मूर्ध
जीवनक कठोर तपस्यामे लोल
हम पंचतपा छी

ओ अँखि

एकटा फोटोक अँखि
बड़ ममत्व आ सिनेहुसँ
तर्कन अछि हमरा दिस

ओ अँखि
हमरा भीतर
दूर धरि अन्तसमे पसरि जाइत अछि
हमरा भीतर हुलसऽ लगैत अछि कोनो हुलास
छिटकऽ लगैत अछि इओरिवा
एकरा गीत कहि देख कोनो बताह

ओ अँखि
हमरा गिरामे दोड़ा दैत अछि
एकटा मद्धम सन आगि
जे शनैः शनैः चलिऽ
आबि जाइत अछि हमर बेतना दिस
फेर बह्य लगैत अछि हमर कलममे
आ कागज पर उतरि अबैत अछि शब्द बभिकऽ
जकरा हमर कोनो संगी कहि देख कविता

ओ अँखि
हमरा हाथमे यम्हा दैत अछि कोदारि
आ हम भगैत छी माटि दिस
उन्टवैत छी माटिक घुन्ट
दिशबैत छी ओकरा हवा आ रौद
बाउग करैत छी कोनो बोया
नहुराइत अछि हवाक झोंकसँ
तँ हबे दैत अछि ओकर नाम—
जीवन

हमर अँखि घुरैत अछि
फोटो दिस
फोटोक ठोर हँसैत देखाइत अछि

अयना

हुनका छलनि कतेक रास अम
अदीसैं-अपनहि मादे
कि हुनक मुलझासैं झरैत अछि फूल
बड़ सुचिस्कन अछि हुनक देह्यष्टि
हुनका छलनि विश्वास
कि हुनक भुकुटि पर बंसल अछि सिकन्दर मझान
आ जे टेंढ़ होयत हुनक भुकुटि
तेँ डोलय लायल मृष्टि
आ आबि आयल मूरम्प
हुनका होइत छलनि जे
हुनक आंगुरमे मुकायम अछि कीनो वेदब्यास
जे किछु निखत हुनक आंगुर
भऽ जायत ओ ब्रह्म बाक
कहाओन वेद आ पुराण
अपन बाँहि पर उगल माछमे
ओ अनुभव करैत छलाह
यन-सम्पाद टारजनक उप स्थिति
अपन आँखिमे नजरि अबैत छलनि उलाल समुद्र
जे बेरने अछि पृथ्वीकेँ एक आ तीनक अनुपातमे
नीक-बेजाय लोकसैं भरल ई पृथ्वी
हुनका लागनि अपन तरह्य पर
जेना बराहक दाँत
वा मेघनागक जिह्वा हो हुनक तरह्य
अमक आवेगमे एक बेर
ओ हमरा आपाँसैं बहरयलाह
हुनक हुलकी हमरामे
आ ससब हुनक वाउनक महल
एकटि सगे दुनू बात भेल
आ हमर आँखि एखरे मखौन बुझलक ई सत्य
किछु नहि.... किछु नहि
ओ एकटा अम्बिपंजरसैं फराक
किछु नहि.... किछु नहि छथि

किसुनदेव लोहार

मुहजक आलोक पसरवामे
अछि एखन विनम्र
पसरल अछि अन्हार
लोक अपन-अपन ओछाओन पर
मृतल अछि निसभेर
मधुर-मुमधुर स्वप्नमे
मातल अछि सभ
नीरवता पसरल अछि
सम्पूर्ण वातावरणमे

हठात
गुँजैत अछि हथौड़ाक आवाज
ठन-ठक, ठन-ठक
टूटैत अछि नीरवता
स्वप्न आ निद्रा

पोखरिक कातमे
अदीसैं ठाढ़ पोपर पर
शुष भऽ जाइत अछि
बिड़ै-जुनमुनीक कलरव
बिघन पड़ल हमरो निद्रामे
कुनमुनाइत फेरैत छो करोट
कान पर केहुनी रासि करय चाहैत छी
आवाहन—
एक मिसिया निद्राक

ठन-ठक, ठन-ठक
हथौड़ा फेर ठनकल

निद्राक आवाहन आब अछि व्यर्थ
ई सोचि फुजि रेल आँखि
देखल
मुहजक एकटा आनोक खड

हथोड़ाक वोठसं प्रकपित
 भऽ रहल अछि जखन
 लोक जा प्रकृति
 हम ओछाओन पर कोना रही तखन
 आगम करैत

ठन-ठक, ठन-ठक
 हथोड़ाक स्वर
 बिड़ै-धुनमुनीक कलरव
 नेला सभक कानबाक स्वर
 भोरका अहलदिली
 ई ताम समबेल स्वर
 कऽ रहल अछि
 'धमेव जयते'क उद्घोषणा

गुरु भऽ गेल अछि दिनचर्या
 किशुनदेव लोहारक
 ठन-ठक, ठन-ठक
 ई स्वर लगैछ हमरा
 मोहक संगीत जका

होइछ एहने

होइछ कडखन एहने
 जे खाली रहैछ जेबो
 आ वनऽ लगैछ
 दू गोटाक बीच
 एकटा देवाल
 मोन भऽ जाइछ सघन
 तनऽ लगैछ
 दुनूक बीचक तार
 छटि जयबाक सीमा धरि

मुस्की तऽ बूर
 किछु शब्दक आदान-प्रदान धरि
 भऽ जाइछ असंभव

देहसं देह केर मध्य
 पसरि जाइछ
 कतेको महासागर
 जकर दुनूकात
 ठाढ़ लोक
 देखि नहि पवैछ
 एक-दोसरक
 हिलंत हाथ

कछमछी

एहि नगरक
बहुत रास लोक जखन
घाम बहबैत रहैत अछि
एहि सोचसँ करारक भऽ कऽ
जे नगर केर
इमारत सभक
तंतु - तंतु
कु डाबोर अछि
हुनक घामसँ

तखन
एहि नगरक
किछु लोक

कोनो
सार्वजनिक सभाये
दावा कोर्कैत रहैत छथि
न्यों केर पजेवा पर
अपन - अपन
हस्ताक्षर होयबाक

इमारत
हिलैत रहैत अछि
न्यों केर
पत्रिका कछमछीसँ

आत्मसम्मान

ई किछहु संभव नहि
जे अहाँक समस
झुकबैत रही हम अपन माथ
सुनैत रही अहाँक झिड़की
सहैत रही अहाँक दुत्कार
बटैत रही अहाँक एँठ
हिलबैत रही नांगरि

जँ अहाँ एहन किछुओ करब
जे रुचैत नहि हो हमरा
अथवा पढ़ैत हो हमरा सम्मान पर
अथवा खतरा जकाँ लगेत हो हमरा

तँ विश्वास कर
हम मात्र झुकबै टा नहि करब
काटियो लेब अहाँक

मान्यवर !
हम अहाँक नहि
दोसर पार्टीक
कुकुर बिकहै

जरबन बावशाह हँसैत अछि...

सौसे रियासतमे
पसरि गेल अछि सगसनी
नहि जानि की होमऽ बना अछि
काल्हि बावशाह मुस्कायन छल

बावशाह हँसैत छल
बन कोठलोमे
मात्र दरबारी समक नीच
काल्हिसँ पहिने

बावशाहक चेहरा
सदिल्ल
रहैत छल भावहीन
गम्भीर होयबाक आभास दैत
साइत रियासत आ रियायाक फिकिरसँ

मुदा एहि बीच
नहि जानि किएक
बदहवासी पसरल रहैत छल
बावशाहक तनल चेहरा पर
चौकचल डीडीरक रुपमे

मुदा काल्हि पहिल बेर
मार्कजिनिक रुपे
हँसल छल बावशाह

आइ सुनल अछि
रियासतक एकटा पोसरिसँ
बहरायल अछि
क्षत - विक्षत लहारा
एकटा मजदूरक

अभिनन्दन

मान्यवर !
हमरा घर डाका पड़ल
सागि देल गेलाह कका नृशंसतासँ
अहाँक रग - रग फटक उठल
समाहरणालयक समक्ष
धरना पर बैसि गेलहुँ अहाँ
ओना तँ
तम्बु, करात आ समर्थकगणसँ
घेरायल रही अहाँ
मुदा कष्ट तँ भेले होयत

मान्यवर !
पिताक आकस्मिक निवृत्तसँ दुखी रही हम
मुदा बाहन सभक नमहर कफिलाक संग
अहाँक आगमन
कऽ गेल हमर अँगन-दरबज्जाकेँ आह्लादित
हम भाव-विभोर छलहुँ
ई सोचि जे
हमरा सनक पीड़ामे
मान्यवर सन लोक सेहो छथि सम्मिलित

मान्यवर !
कोनो मुखक बीड़ीसँ उड़ल लुत्ती
जरा कऽ सुड़ाह कऽ गेल
सौमे टोलक घर
ठीक दोसरे दिन
दमकल अयबासँ पूर्वैहि
आबि गेल छलहुँ अहाँ
अहाँक वाणीसँ निस्सरित होइत घर
मेटा देने छल
हमरा सभक सभटा फोका

मान्यवर !
 पछिला बाढ़िमे
 नहि छल माह
 नहि छल राहतकेर कोनो भौतिक सामग्री
 दूर-दूर बरि पसरल छल
 मात्र बाढ़िक मटिआवल-गोजायल पाणि
 तखनी
 हेलिकप्टरसँ बहरायल
 अहाँक हिलैल हाथ
 हमरा सभक संग साथ छल

मान्यवर !
 पछिले बरल जखन
 सूतल के सुतले रहि गेल छल रमेखरा
 हरिजन कॉलोनीक अनचोके दहि गेल
 देवाल आ छतक नीचा
 तखन ओकर लहासके
 पोस्टमार्टमक दुर्गतिसँ
 बेसगट बचा लेने छल
 अहाँक एक अदब कोन-कॉल

मान्यवर !
 प्रत्येक जोर - जुलम - अत्याचार - अनाचारक
 आगाँ - पाछाँ
 सविस्तर उपस्थित रहल छी अहाँ
 जुलूस, रैली आ हड़तालक रूपमे

मान्यवर !
 गहरमे दंगा भडकल
 भाइ-भाइक बुढ़ी छिड़िओलक
 लहासक लागि गेल अमार
 विश्वास अदृश्य भऽ गेल ईश्वर जकाँ
 इमशान जकाँ धधकि उठल सौंसे शहर
 आ अहाँ फेर

समाहरणालयक समक्ष
 शामियाना गतानि कऽ
 बैसि गेल छी आमरण अनशन पर

मान्यवर !
 लहास सभ तँ जरा देल गेल
 मुदा सुनल अछि जे आत्मा अमर थिक
 जँ साँच अछि ई बात
 तँ अहाँक ई आमरण अनशन
 ओहि आत्मा सभके
 बुवा देल तृप्तिक गहीँर सरोवरमे

मान्यवर !
 हम सभ
 कोनो ने कोनो तरहें
 जीवित रहि पाबि रहल लोक
 सेहो
 कृतज्ञ छी अहाँक

मान्यवर !
 हम सभ अहाँक
 हादिक अभिनन्दन करैत छी !!!

आक्रमण

कोना नइल जायत ई रण
जीतल कोना जायत
रण मानल जायत वा नहि एहि रणके
प्रत्येक क्षण जारी एहि रणकेर
रणभूमिमे ठाढ़ हमसभ
ताकि रहल छी मुँह
अपन आगाँ ठाढ़ योद्धा सभक
आ असमंजसमे फँसि जाइत छी हमसभ
कील भऽ जाइत अछि
हवियार पर कसल हाथ

हाथ पर हाथ राखि
ठाढ़ छथि
अग्रिम पंक्तिक योद्धागण
कखनो समझौता - बातमे
कखनो दू डेग आगाँ
तँ कखनो दू डेग पाछाँ

कोनो दिन होयत ई
जे अज्ञात-अदृश्य शत्रुसँ लड़बाक बचाव
लड़य पड़त हमरा सभके
प्रत्येक क्षण लड़ल जा रहल
एहि रणक रणभूमिमे
आगाँक पंक्तिमे ठाढ़ योद्धा सभसँ
आन्तरिक होबऽ पड़त हमरा सभके
अग्रिम पंक्तिक योद्धा सभपर

दूध भरल पाथर

(वरमणि मो० राधेन्द्र झाक लेन)
शाल - निश्चल झीलमे
खसैल अछि एकटा डेला
पानिक समतल सतह
लहर सभक हलचलसँ अपस्यांत भऽ जाइछ
ई डेला पाथरक अछि
ई डेला
हुनक भोजनक कीर मे आबि सकैत अछि
जे बहुजन हितायसँ मुँह मोड़ि
भाव स्वजनक फिकरमे डूबल छथि
ई पाथरक डेला—
की थिक एकर नाम ?

ए'मत्वहीन अन्हार जंगलमे
विद्युत - छटा छिड़िअबैत
पसरि जाइत अछि एकटा गुरुप-गंध
जंगलक छाती पर
कुइहरि जकाँ अबैत ई चमक—
की थिक एकर नाम ?

एकटा फल
जे नारिकेर जकाँ अछि
नारिकेर जकाँ नहि अछि
उपरसँ कठोर - निर्दय - सशस्त्र
भीतरसँ बहैत दूधक झरना
तपस्वी सन कठोर
गृहस्थ सन कोमल
ओ फल जे पाथर जकाँ अछि जहर
मुदा प्रेमक चाहमे बरकि कऽ
दूध जकाँ तरल भऽ सकैछ
ई फल—
की थिक एकर नाम ?

बुलबुल

बुलबुल !
हर्ष आ उन्माद से भरल
अहंकि कूजन
हवा पर हेलैत
संगीतमय लहरि पर
सवार भऽ कऽ
बनल अखि
वन्य जीवनक
एकटा चिरन्तन अंग

बुलबुल !
अहाँ कहियो
पिजड़ा देखने छी ?
स्वप्नदृमे ?